Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 6 No. : 6 July - 2020

International Journal of Social Science & Management Studies

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

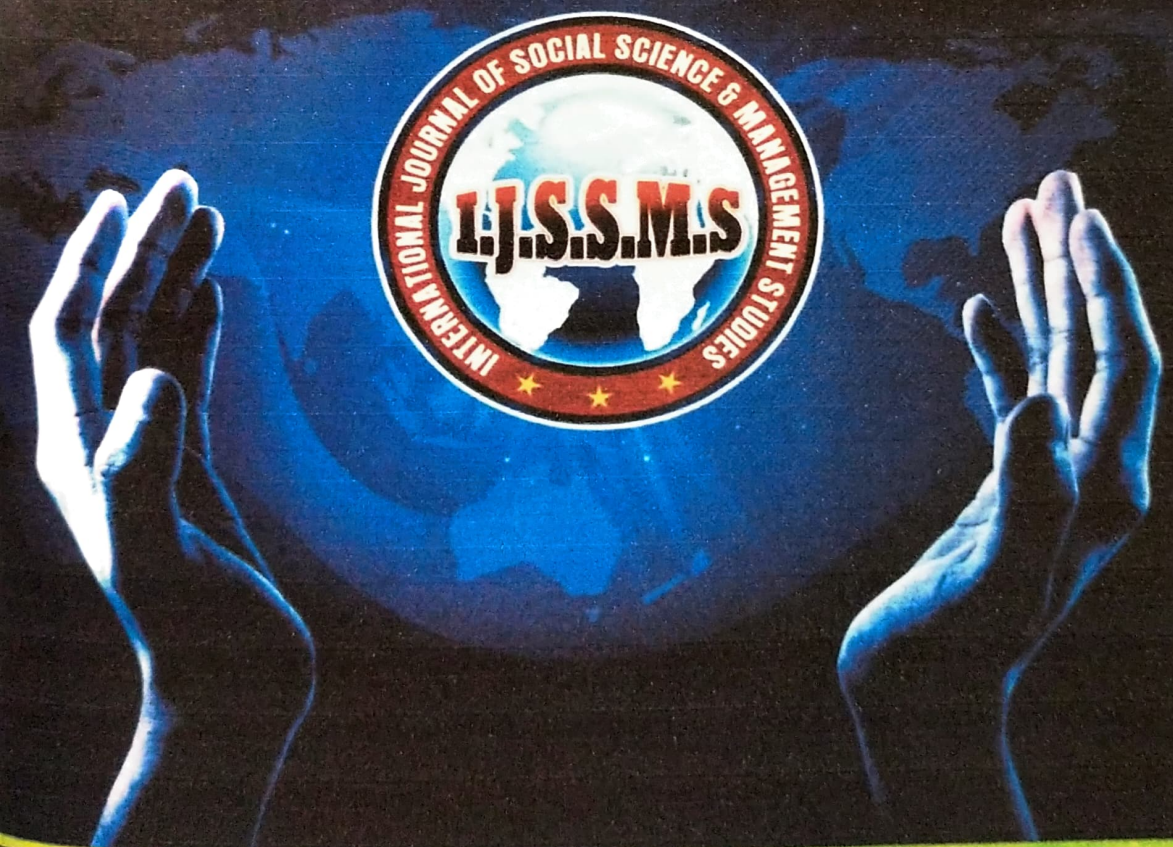

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

ISRS International Scientific Research Solution

International Journal of Social Science & Management Studies

CONTENTS

S.No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	कोरोना काल में वैश्वीकरण की प्रक्रिया में परिवर्तन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	संतोष कुमार मौर्य	1-4
2	ग्रामीण जातीय संरचना में प्रवासियों का प्रभाव (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	प्रियंका कुमारी	5-8
3	वैश्विक महामारी कोविड–19 का वर्तमान में मलिन बस्तियों पर प्रभाव	अतुल कुमार यादव	9-12
4	कृषक सशक्तीकरण में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व–एक विश्लेषण	राजेश कुमार पूर्वे	13-15
5	मानव संसाधन और आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान	डॉ. विशेष कुमार	16-19
6	उत्तर आधुनिकता और वैश्वीकरण में सम्बन्ध	साधना मौर्या	20-23
7	लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीयकरण में ग्राम सभा की भूमिका	Seema Rani	24-29
8	जन सरोकारों का कवि कुमार विकल	डॉ. श्रीनिवास सिंह यादव	30-34
9	डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के सामाजिक–आर्थिक विचार	दयाराम मुझाल्दा कान्ता अलावा	35-38
10	पुस्तकालय का वर्गीकरण एवं विशेषताएं	ममता यादव	39-44
11	नगरीय प्राधिकरणों का वित्तीय प्रबंधन	श्रीमती ज्योति सेन	45-46
12	रामकथा परक उपन्यासकार – डॉ. नरेन्द्र कोहली व्यक्तित्व एवं कृतित्व	विक्रम पाटीदार	47-49
13	नरेन्द्र कोहली कृत अभ्युदय में मानवीय जीवन मूल्यों की अवधारणा	मनोज तिवारी	50-52
14	वर्तमान परिदृश्य में बदलते शिक्षा परिवेश में शिक्षकों की भूमिका एवं समस्या	अजय कुमार डॉ. धीरेन्द्र सिंह यादव	53-56
15	प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन	अजय कुमार अत्री अभय वीर सिंह	57-66
16	शिक्षा में शोध का महत्त्व	दिलीपभाई जयसिंग वसावा	67-70
17	भारतीय संस्कृति में निहीत मानव मूल्य	डॉ. अनिरुध्धसिह योगेन्द्रसिंह राउलजी	71-72
18	प्राचीन भारत में दण्ड के स्वरूप का ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ. जीतेन्द्र कुमार पाण्डेय	73-75
19	वनोपज सहकारी समितियों की भूमिका का अध्ययन बालाघाट जिले के संदर्भ में	सुप्रीत कौर डॉ. पी.एस. कातुलकर	76-78

20	भारत में बाल अपराध की स्थिति	पवन सोनी	79-82
21	कलचुरि-कालीन कला में धार्मिक समन्वय (त्रिपुरी के विशेष संदर्भ में)	प्रवीण कुमार	83-85
22	सूचना के अधिकार का आम नागरिक से सम्बन्ध	डॉ. लता दनेलिया	86-89
23	कौटिल्य कालीन भारत की आर्थिक व्यवस्था : वार्ता के संदर्भ में	सारिका सिंह	90-91
24	समाज और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य	श्रीमति ममता मिश्रा	92-94
25	ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था में संभावनाये– कोरोना के सन्दर्भ में	देवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय शची गुप्ता	95-96
26	उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों में अपराध उन्मुखता के मनोसामाजिक व विद्यालयीन कारक	इन्दू बाला शर्मा	97-101
27	राठ क्षेत्र के मुख्य उद्योग एवं उनका पर्यावरणीय प्रभाव एक अध्ययन	डॉ. प्रिय भूषण यादव	102-107
28	मुस्लिम समुदाय के शैक्षिक उत्थान एवं आधुनिकीकरण में सर सैयद अहमद खाँ का योगदान	डॉ. चन्द्रकांता जैन अइयाज अहमद खाँ	108-112
29	महादेवी वर्मा के काव्य नीरजा पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव बौद्ध दर्शन	कु. पूनम	113-117

Peer Reviewed - Refereed Research
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 6, No. – 6, July - 2020

स्लिम समुदाय के शैक्षिक उत्थान एवं आधुनिकीकरण में सर सैयद अहमद खाँ का योगदान

डॉ. चन्द्रकांता जैन (असिस्टेंट प्रोफेसर)
अइयाज अहमद खाँ (शोध छात्र)
शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. सागर (म.प्र.)

रांश :– सर सैयद अहमद खाँ का नाम शिक्षाविदों एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। महात्मा गांधी ने न्हें "शिक्षा का पैगम्बर" की संज्ञा प्रदान की है। सर यद अहमद खाँ ने अपने समय में मुस्लिम समुदाय ी शिक्षा के लिए न केवल वैचारिक व दार्शनिक ायाम प्रदान किया अपितु माओ कॉलेज के रूप में न्हें संस्थागत रूप भी प्रदान किया। आगे चलकर ही माओ कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के रूप ं परिवर्तित हुआ। सर सैयद अहमद खाँ ने कुरआन व स्लाम धर्म की उदार व्याख्या की तथा बाइबिल पर टिका भी लिखी। उनके द्वारा किये गये अथक प्रयत्नों तथा उनके विचारों के परिणामस्वरूप मुस्लिम समुदाय की शैक्षिक स्थिति तथा आधुनिकीकरण में उस समय काफी मदद मिली तथा उन्होंने मुस्लिम समाज को अशिक्षा व अंधकार के गर्त से बाहर निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। वर्तमान में हम इस शोधपत्र के माध्यम से सर सैय्यद अहमद खाँ के उन अमूल्य विचारों व दर्शन को समझने का प्रयास करेंगे तथा उनके कार्यों व योगदानों पर प्रकाश डालेंगे जो कि उन्होंने मुस्लिम समुदाय के शैक्षिक उत्थान के लिए किये थे। इसके साथ ही साथ हमारा प्रयास यह भी रहेगा कि इस बात का पता लगाये कि वर्तमान स्थिति जिसमें मुस्लिम समुदाय की शैक्षिक स्थिति बहुत ही बदतर है, ऐसे में सर सैयद अहमद खाँ के विचार, दर्शन व कार्य कितने प्रासंगिक हैं और कहाँ तक हम इनके द्वारा मुस्लिम शिक्षा को बेहतर बना सकते हैं। निःसंदेह आज की परिस्थिति को देखते हुए सर सैय्यद अहमद खाँ के दर्शन व कार्यों पर एक सारगर्भित, सटीक व विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता महसूस होती है, जिससे कि इंकार करना संभव प्रतीत नहीं होता है।

मानव समाज के विकास में शिक्षा की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास सम्भव हो पाता है। प्राचीन काल में हमारे देश में शिक्षा की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी तथा यह व्यक्तिगत व निजी प्रयासों द्वारा संचालित होती थी। मध्यकाल में भी शिक्षा के लिए राज्य उत्तरदायी नहीं था तथा शिक्षा कुछ वर्गों तक ही सीमित थी। आधुनिक काल में यद्यपि अंग्रेजी शासन ने शिक्षा को राज्य के नियंत्रण में लाने का प्रयास किया तथापि उनका यह प्रयास भारत जैसे विशाल आबादी वाले राष्ट्र के लिए ना काफी था। परिणामस्वरूप शिक्षा का सार्वभौमिकरण संभव नहीं हो पाया। शिक्षा का प्रसार इतना अधिक सीमित था कि समाज का बहुत बड़ा भाग और लगभग सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र आधुनिक शिक्षा से अछूता था। अंग्रेजी शासन द्वारा अंग्रेजी पर आधारित पाश्चात्य शिक्षा को बढ़ावा देने के कारण तथा भारतीय वर्नाकुलर (देशी) भाषाओं संस्कृत व फारसी की उपेक्षा करने के कारण भारतीय समाज के आम जनमानस में यह धारणा बन गई कि अंग्रेजी शासन हमारे धर्म व संस्कृति को नष्ट करना चाहती है। इस कुंठित मनोवृत्ति का प्रभाव मुस्लिम समाज पर कुछ अधिक पड़ा। चूँकि अंग्रेजों ने मुस्लिम शासकों को प्रतिस्थापित कर सत्ता प्राप्त की थी, इसलिए मुस्लिम समुदाय खुद को अंग्रेजी शिक्षा और संस्कृति से अलग रखना शुरू कर दिया। मुस्लिम समुदाय इसे सांस्कृतिक आक्रमण के रूप में देखने लगा। उसे ऐसा लगा कि यदि वे अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करेगें तो उनका धर्म व संस्कृति नष्ट हो जायेगा। मुस्लिम समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले उलेमा व मौलवी वर्ग ने भी इसे प्रश्रय दिया तथा लोगों को अंग्रेजी व आधुनिक शिक्षा से दूर रखा। इन सब का परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम समुदाय शिक्षा व आधुनिकीकरण की दृष्टि से हाशिये पर चला गया।

इन्हीं परिस्थितियों में सर सैयद अहमद खाँ का उदय भारतीय शिक्षा के क्षितिज पर एक सितारे की तरह होता है। जिन्होंने न केवल मुस्लिम समुदाय में शिक्षा का प्रसार किया अपितु उन्हें आधुनिकता को अपनाने के लिए प्रेरित भी किया। यदि सर सैयद अहमद खाँ के उपलब्धियों को वास्तव में समझना है तो हमें उस समय के पृष्ठभूमि व परिस्थितियों को भी समझना होगा, जिसमें वे रहे और कार्य किया। 1857 ई. के स्वतंत्रता संघर्ष के पश्चात् मुस्लिमों की स्थिति बहुत ही दयनीय हो गयी थी। शासक की स्थिति से हटकर अब वे शासित की स्थिति में आ चुके थे। वे नेता व भूस्वामी की अपनी पूर्व स्थिति को खो चुके थे। ब्रिटिश शासन खुलेआम रूप से मुस्लिमों को हतोत्साहित कर रहा था तथा उन्हें संदेह की दृष्टि से देखता था। क्योंकि 1857 के गदर का मुख्य जिम्मेदार मुस्लिमों को ही ठहराया गया था। यही नहीं बल्कि